पाठ 8. चार मित्र

पाठ का परिचय

यह कहानी चार सच्चे मित्रों पर आधारित है। चार मित्र – कौआ, चूहा, कछुआ और बारहसिंघा एक जंगल में रहते थे। एक बार एक शिकारी आया और उसने बारहसिंघे को अपने जाल में फँसा लिया। उसे ढूँढ़ते हुए कौआ वहाँ पहुँचा और बारहसिंघे को मुसीबत में देख दूसरे मित्रों को भी बुला लाया। चूहे ने जाल काटकर बारहसिंघे को आज़ाद कराया। तब तक शिकारी भी आ पहुँचा। बारहसिंघा और चूहा तेज़ी से भाग गए। कौआ भी उड़ गया। अपनी धीमी चाल के कारण कछुआ जाल में फँस गया। अब तीनों मित्र कछुए को आज़ाद कराने की योजना बनाने लगे। थोड़ा आगे जाकर बारहसिंघा शिकारी के मार्ग में लेट गया। कौआ उसकी आँख कुरेदने का बहाना करने लगा और चूहा झाड़ी में छिप गया। बारहसिंघे को देख शिकारी को लालच आ गया। उसने कछुए का जाल नीचे रखा और बारहसिंघे को पकड़ने लगा। बारहसिंघा खड़ा हुआ और भाग गया। कौआ भी उड़ गया। अब जब तक शिकारी कछुए तक लौटता तब तक चूहे ने उसका जाल काट दिया और वे दोनों झाड़ी में छिप गए थे। इस प्रकार सभी मित्रों की जान बच गई और शिकारी को निराश खाली हाथ लौटना पड़ा।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हमें विपत्ति में मित्रों की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका शुद्ध उच्चारणसहित आदर्श वाचन करें। बच्चे पुस्तक पर सही स्थान पर उँगली रखते हुए सुनें। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। बीच-बीच में प्रश्न पूछते रहें। बच्चों को भी प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्न प्रश्नों के आधार पर चर्चा करें –

- क्या हमें पशुओं को मारना चाहिए?
- पशुओं एवं पक्षियों से कैसा व्यवहार करना चाहिए?
- अगर तुम किसी व्यक्ति को किसी पशु को मारते हुए देखोगे तो क्या करोगे?
- पशु हमारे क्या-क्या काम आते हैं?
- यदि तुम्हें कोई मारे तो तुम कैसा महसूस करोगे?

बच्चों से उनके पालतू पशु के बारे में बातें करें।